

प्रमुख रोगों के प्रबंधन हेतु विधियों का पैकेज

क्र. सं.	कीट का नाम	क्या करें	कब करें	क्यों करें	कैसे करें	क्या नहीं करें	क्यों नहीं करें
1.	ग्रीवा विगलन <i>स्कलैरोशियम रोलफसी</i>	गहरी टिल	ग्रीष्म के दौरान (मई-जून)	रोगाणुओं के मलवे और स्कलैरोशिया को निष्क्रिय करने के लिए मृदा में गहरा दबाना	गहरी जुताई द्वारा	पानी जमा न होने दें	यह रोग को आकर्षित करता है।
		सहिष्णु किस्म NRC 37 का उपयोग	...	पैदावार हानि कम करने के लिए
		ट्राइकोडर्मा विरिड @ 5g/kg या कवकनाशी थिराम+कार्बेन्डाजिम 2 : 1 या कार्बोजिक्सन एवं थिराम संयुक्त उत्पाद @ 3g/Kg के साथ बीज उपचार	बुवाई के कम से कम 12 घंटे पहले उपचार	मृदा जनित संरोप तथा प्रारंभिक पौध संक्रमण के नियंत्रण हेतु	नम बीज (लगभग 10 ml जल/Kg) कवकनाशी के साथ समुचित रूप से मिलाकर तथा उसे छाया में सुखाकर	कवकनाशी पूरी तरह सूखे बीज के साथ नहीं मिलाया जाना चाहिए और न ही धूप में सुखाना चाहिए।	अन्यथा, उपचार का वांछित प्रभाव नहीं होगा।
		इष्टतम बीज दर	बुवाई के समय	अच्छी और जानदार फसल हेतु	संस्तुत बीज दर अपनाकर या फालतू पौध हटाकर	बुवाई हेतु बीज दर अधिक नहीं होनी चाहिए	परिणामी उच्चतर समष्टि रोगाणुओं के अनुकूल सूक्ष्म जलवायु सृजित करेगी
		2 वर्षीय चक्रानुक्रमण अथवा अंतरफसलीकरण मक्का/ज्वार के साथ	खरीफ के दौरान	रोगाणुओं की समष्टि घटाने के लिए
2.	चारकोल विगलन <i>मैक्रोफोमिना फेजियोलिना</i>	गहरी जुताई	ग्रीष्म के दौरान (मई-जून)	रोगाणुओं के मलवे और स्कलैरोशिया को निष्क्रिय करने के लिए मृदा में गहरा दबाना	गहरी जुताई द्वारा	लम्बी अवधि तक खेत को सूखा न रहने दें खासकर पौध तैयार होने और पुष्पन के दौरान	फसल पर चारकोल विगलन शीघ्र होगा, जिससे पैदावार को हानि पहुंचेगी।
		रोगों के प्रति कम संवेदी किस्मों का उपयोग : NRC 2, NRC 37, JS 71-05, LSb 1, MACS 13, JS 97-52 इत्यादि	...	पैदावार हानि कम करने हेतु	एक समय पर 2 से 3 तक कम रोग संवेदी किस्मों का उपयोग किया जाना चाहिए
		ट्राइकोडर्मा विरिड @ 5g/kg या कवकनाशी थिराम+कार्बेन्डाजिम 2 : 1 या कार्बोजिक्सन	बुवाई के कम से कम 12 घंटे पहले	मृदा जनित संरोप तथा प्रारंभिक पौध	नम बीज (लगभग 10 ml जल /Kg बीज)	कवकनाशी पूरी तरह सूखे बीज के साथ नहीं मिलाया जाना	अन्यथा, उपचार का वांछित प्रभाव नहीं होगा।

		एवं थिराम संयुक्त उत्पाद @ 3g/Kg के साथ बीज उपचार	उपचार	संक्रमण के नियंत्रण हेतु	कवकनाशी के साथ समुचित रूप से मिलाकर तथा उसे छाया में सुखाकर	चाहिए और न ही धूप सुखाना चाहिए।	
		अगेती बुवाई	मानसून आने के बाद शीघ्रतम उपलब्ध अवसर पर	कम संक्रमण बढ़िया अंकुरण तथा समष्टि हेतु	मानसून पूर्व बौछारों के साथ ही खेत को तैयार रखा जाना चाहिए और यथाशीघ्र बुवाई की जानी चाहिए	यदि जल्द बुवाई का मौका उपलब्ध है तो बुवाई में जानबूझकर देरी न करें,	बुवाई में देरी करने पर फसल की रोगों के प्रति संवेदनशीलता और रोगाणुओं में विषाक्ता एक साथ घटित हो सकती है जिससे पौद का पतन हो सकता है या शेष पौद निप्तेज हो सकते हैं।
		रोग तप्त स्थल क्षेत्रों के लिए कम बीज दर	बुवाई के समय	पादपों में इष्टतम नमी, पोषक-तत्व, की उपलब्धता होनी चाहिए जिसके फलस्वरूप फसल का अच्छा विकास होगा	रोग तप्त-स्थल क्षेत्रों में संस्तुत या उप-इष्टतम बीज दर रखें या अतिरिक्त पौधों को निकाल दें	बीज की मात्रा अधिक नहीं रखें	तप्त स्थल क्षेत्रों में, जो लम्बे समय तक सूखे रहते हैं, अधिक समष्टि के कारण मृदा नमी रोगाणुओं के प्रति अधिक अनुकूल होगी
		अगेती बुवाई	मानसून आने पर शीघ्रतम उपलब्ध अवसर पर	कम संक्रमण बढ़िया अंकुरण तथा समष्टि हेतु	मानसून पूर्व बौछारों के साथ ही खेत तैयार रखा जाना चाहिए तथा बुवाई यथाशीघ्र शुरू की जानी चाहिए	यदि जल्द बुवाई का मौका उपलब्ध है तो बुवाई में जानबूझकर देरी न करें	बुवाई में देरी करने पर फसल की रोगों के प्रति संवेदनशीलता और रोगाणुओं में विषाक्ता एक साथ घटित हो सकती है जिससे पौद का पतन हो सकता है या शेष पौद निप्तेज हो सकते हैं।
		मृदा नमी बनाए रखें	फसल विकास के दौरान खासकर पुष्पन तथा फली स्थापन के दौरान	रोगाणु के बहुगुणन को रोकना	सिंचाई द्वारा	दीर्घ अवधि तक खेत सूखा न रहने दें	सूखापन रोगाणुओं के लिए अनुकूल होगा।
		कपास/खाद्यान्नों द्वारा 2 वर्षीय चक्रानुक्रमण
		मृदा नमी बनाए रखें	खेत तैयार करने के समय पर	-----	मृदा में उर्वरक की संस्तुत मात्रा का प्रयोग	किसान सोयाबीन में उर्वरक का प्रयोग न करने की आम प्रवृत्ति से परहेज करें	अन्यथा, पौधे कमजोर होंगे उन पर रोगाणु आसानी से हमला कर देंगे
3.	जैविक स्फोट जैन्थोमोनास कैम्पोस्ट्रिस PV. ग्लाइन्	गहरी टिल	ग्रीष्म के दौरान	संक्रमित मलवा तथा जड़ें हटाएं	गहरी जुताई द्वारा	वर्षा के दौरान खेत पर कार्य नहीं किया जाना चाहिए	संक्रमण को आकर्षित करता है

		फसल के मलवे तथा गेहूं की जड़ें हटाएं	खेत कार्य के दौरान	संरोप भार कम करने के लिए क्योंकि जीवणु गेहूं की जड़ों के मूल परिवेश में पनपते हैं
		प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग : PK 416, PK1029, PK 1042, JS 71-05, JS 90-41, हिम्सो 1563, इन्दिरा सोया 9, KHSb 2, MAUS 32, NRC 7, NRC 37 इत्यादि	...	फसल क्षति कम करने हेतु	एक समय पर 2 से 3 किस्मों का उपयोग किया जाना चाहिए
		स्ट्रेप्टोसाइक्लिन @500 mg/Kg. के साथ बीज उपचार	बुवाई से कम से कम 12 घंटे पहले	रोगाणु भार कम करने हेतु	नम बीज में प्रतिजैविक अच्छी तरह मिलाकर और छाया में सुखाकर	प्रतिजैविक पावडर को पूरी तरह सूखे बीज में नहीं मिलाना चाहिए और न ही धूप में सुखाना चाहिए	अन्यथा उपचार का वांछित प्रभाव नहीं होगा।
		मक्का/अरहर द्वारा चक्रानुक्रमण	खरीफ के दौरान				
		K उर्वरक का उचित मात्रा में अनुप्रयोग	खेत तैयार करने के समय पर	इससे पादपों में रोगाणुओं के प्रति प्रतिरोध पैदा होगा।	K उर्वरक को आवश्यकता के अनुसार मिलाएं	अन्य उर्वरकों से परहेज नहीं करें	पादप दुर्बल होंगे तथा फसल विकास क्षीण होगा
		कॉपर ऑक्सी क्लोराइड 0.2% + स्ट्रेप्टोसाइक्लिन (0.02%) या कासुगामाइसन @ 0.2% का 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें	25 से 45 डी.ए.एस. के बीच छिड़काव करें	रोग प्रारंभ होने या उसका द्वितीयक प्रसार रोकने के लिए	दोनों रसायनों की अपेक्षित मात्रा को 500 से 800 लीटर पानी में मिलाकर (फसल की आयु तथा विकास पर निर्भर) तथा फसल पर इस प्रकार छिड़काव करें ताकि पत्तियों पर ओर से छिड़काव हो सके।	विशेषज्ञ के परामर्श के बिना छिड़काव घोल के साथ अन्य कोई कवकनाशी न मिलाएं क्योंकि ऐसी स्थिति में घोल में अनुरूपता की समस्या हो सकती है	फसल पर पादप संबंधी विषाक्तता हो सकती है।
4.	माइरोथीस्लिम पर्ण चित्ती माइरासेथीसियम रोरिडम	गहरी टिल	ग्रीष्म के दौरान	संक्रमित मलवा तथा जड़ें हटाने के लिए	गहरी जुताई द्वारा
		स्वस्थ रोगमुक्त बीजों का उपयोग	बुवाई के दौरान	अच्छी तथा उत्कृष्ट फसल विकास के लिए	संस्तुत बीज की मात्रा का प्रयोग कर या फालतू पौध हटाकर	घटिया गुणवत्ता, रंगहीन तथा छोटे आकार के बीज का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए	यह रोग बीजजनित भी है। संक्रमित बीज से फसल कमजोर होगी।

		मध्यम प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग : जेएस 71-05, JS 335, MAUS 47, NRC 7, MACS 124. PK 564 इत्यादि	...	फसल हानि कम करने हेतु	एक समय पर 2 से 3 मध्य प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग किया जाना चाहिए
		कवकनाशी के साथ थिराम+कार्बेन्डाजिम @3g/Kg (2:1) का बीज उपचार	बुवाई से पहले	रोगाणुओं का बीज जनित निवेश-द्रव्य कम करने हेतु	नम बीज को कवकनाशी के साथ समुचित रूप से मिलाकर तथा छाया में सुखाकर	कवकनाशी पूरी तरह सूखे बीज के साथ नहीं मिलाया जाना चाहिए और न ही धूप में सुखाया जाना चाहिए।	अन्यथा, उपचार का वांछित प्रभाव नहीं होगा।
		कार्बेन्डाजिम या थायोफेनेट मिथाइल का (0.05%) का छिड़काव	30 पर 45 डीएसपर छिड़काव करें	फसल प्राप्ति पर रोग का प्रभाव कम करने हेतु	रसायनों की अपेक्षित 500 से 800 लीटर मात्रा को जल में मिलाकर और फसल पर इस प्रकार छिड़काव करे ताकि पत्तियों की दोनों सतहों पर छिड़काव से गीली हो जाय।	पानी की कम मात्रा नहीं लें और साथ ही विशेषज्ञ की सलाह के बिना कोई दूसरा कवकनाशी या कीटनाशी सान्द्रण के साथ न मिलाएं	वांछित प्रभाव नहीं होगा तथा पादप आविषालुता की संभावना हमेशा बनी रहेगी
5.	सोयाबीन रतुवा फैकोप्सोरा पैकिरिजी	गहरी ग्रीष्म टिल	ग्रीष्म ऋतु में मई-जून	प्रारंभिक बिषाणु के स्रोत को कम करने के लिए संक्रमित पादप के भागों को जमीन में गाढ़ देना	गहरी जुताई द्वारा, कम से कम 12" गहरी होनी चाहिए	उथली जुताई नहीं करनी चाहिए	यह अधिक प्रभावशाली नहीं होगा
		एक वर्ष में सोयाबीन की एक फसल	...	रतुवे का निवेश द्रव्य नष्ट करने तथा बेमौसम में पोषी फसल में रतवे की बढ़वार नहीं होने देने के लिए	...	वर्ष में सोयाबीन की 2-3 फसल नहीं ली जानी चाहिए	रोगाणु बहुगुणन के लिए परपोषी साल भर उपलब्ध रहेंगे। तब यह संरोप बेमौसम में सोयाबीन फसल को ग्रसित कर पैदावार को भारी क्षति पहुंचाएगा।

		सहनशील किस्मों का उपयोग : PK 1024, PK 1029, इंदिरा सोया 9m JS 80-21, MAUS61-2	...	फसल हानि घटाने हेतु	एक समय पर 2 से 3 सहनशील किस्मों का उपयोग किया जाना चाहिए।
		मक्का अथवा प्रदेश की अन्य फसलों द्वारा फसल चक्रानुक्रमण	खरीफ सीजन के दौरान	रतुवा रोगाणु जननद्रव्य खत्म करने के लिए	...	रतुवा तप्त स्थल क्षेत्र में हर साल सोयाबीन फसल नहीं लेनी चाहिए	रतुवा रोगाणु का जीवनचक्र भंग करने हेतु
		हेक्साकोनाजोल / प्रोपीकोनाजोल / ऑक्सीकार्बोक्सिन / ट्रायडिमेफोन (कोई एक) का एक रोग निरोधी छिड़काव (रतुवा तप्त स्थल क्षेत्रों में)	बुवाई के 25-30 दिन बाद प्रोफाइलेटिक (रोग निरोधी) छिड़काव तथा अन्य छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर, पहला छिड़काव रतुवा रोग प्रारंभ होने पर	प्रारंभिक संक्रमण रोकने हेतु प्रोफाइलेटिक (रोग निरोधी) का छिड़काव और द्वितीयक प्रसार रोकने हेतु अन्य छिड़काव	कवकनाशी की अपेक्षित मात्रा 800 लीटर पानी में मिलाएं। छिड़काव शाम के समय किया जाना चाहिए।	पानी कम मात्रा में न लें तथा रतुवा रोग दिखते ही छिड़काव करना चाहिए।	रोग की जांच के लिए फसल पर कवकनाशी घोल की पर्याप्त और सदृश मात्रा में छिड़काव करें
6.	पीत मोजेक सूंगबीन पीत मोजेक वायरस	फोरेट 10g@ 10 Kg. / ha का मृदा अनुप्रयोग	बुवाई के समय	कीट तथा सूत्रकृमियों के नियंत्रण हेतु	फर्टि-सीड ड्रिल द्वारा या छिटककर (फोरेट को उर्वरकों के साथ मिश्रित किया जा सकता है)
		प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग : 416, PK 472, PK 1024, PK 1029, PK 1042, SL 295, SL 525 इत्यादि।	प्रतिरोधी किस्मों के बीज बुवाई से काफी पहले खरीदे जाने चाहिए	रोग आपतन रोकने या न्यूनतम करने हेतु	2 या 3 प्रतिरोधी किस्मों की बुवाई द्वारा	संवेदनशील किस्मों का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए	इससे न केवल पैदावार घटेगी बल्कि निवेश द्रव्य में भी वृद्धि होगी
		अपतृण समष्टि प्रबंधन द्वारा अपतृण मुक्त कृषि	पूरी फसल-ऋतु के दौरान	इस वायरस के लिए कुछ आपतृण को पोषी संग्रह के रूप में ध्यान में रखना	यांत्रिक अथवा रासायनिक विधि द्वारा अपतृण को नियंत्रण करना	सोयाबीन खेतों के आसपास ब्राकिआरिया रैमोस, एकिलप्टा अल्बा, स्ट्रमेरियम, जैनिन्थियम जैसे अपतृणों को नहीं छोड़ना	इन अपतृणों में वायरस काफी ज्यादा फेल जाएगा और सफेद मक्खियां सोयाबीन फसल को संक्रमित करेंगे।
		थियामेथोक्सम 35 FS @ 6 g/Kg द्वारा बीज उपचार	बुवाई पूर्व उपचार	सफेद मक्खी को नियंत्रित करने से यह वायरस संक्रमण से फसल की रक्षा करेगा	नम बीज को कीटनाशी के साथ अच्छी तरह मिलाकर तथा छाया में सुखाकर	कीटनाशी पूरी तरह खुश्क बीज के साथ नहीं मिलाया जाना चाहिए तथा धूप में नहीं सुखाना चाहिए	अन्यथा उपचार का वांछित प्रभाव नहीं होगा

		थियामेथोक्सम 25 wG @ 100 g/ha का छिड़काव	यदि ST नहीं किया गया है तो अंकुरण के 7-10 दिन बाद, अन्यथा रोग प्रकट होने पर	वायरस के प्रबंधन हेतु वाहक कीटों का नियंत्रण	पानी की अपेक्षित मात्रा में कीटनाशी मिलाकर	पानी की मात्रा कम नहीं होनी चाहिए, दोपहर में छिड़काव से बचें	उपचार की प्रभावशीलता घट जाएगी।
7.	पर्णाभिता (फाइलौडी)संबद्ध अ-शिम्वन (नो पौडिंग) लक्षण	गहरी टिल	मई-जून में	संक्रमित मलबा और जड़ें दबाने के लिए	गहरी जुताई द्वारा
		फोरेट 10G@ 10 Kg/ha का मृदा अनुप्रयोग	बुवाई पर	कीटों तथा सूत्रकृमियों के नियंत्रण हेतु	फर्टि-सीड-ड्रिल या प्रसारण द्वारा (फोरेट उर्वरकों के साथ मिलाया जा सकता है)
		रोगविहीन बीज की बुवाई, संस्तुत दर पर	...	स्वस्थ और उत्कृष्ट फसल के लिए	पिचके तथा रोगग्रस्त बीजों की बुवाई से पहले अलग कर देने चाहिए	बीज दर ऊंची नहीं रखें तथा समष्टि अधिक नहीं रखें	क्योंकि संख्या बाहुल्य कीटों के लिए प्रवर्तन पूर्व कारक होगा जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस संलक्षण से सम्बद्ध है।
		सनई तथा तिल की खेती से बचना	...	कीट वाहकों तथा पादप संरोप से बचने के लिए
		क्लोरीपायरीफॉस या ट्रायजोफॉस या मेथोमाइल या क्विनलफॉस की संस्तुत मात्रा का छिड़काव	तप्त स्थल क्षेत्रों में बुआई के 10-20 और 28-30 दिन बाद	कीट तथा कीट वाहक नियंत्रण हेतु	छिड़काव घोल इस प्रकार छिड़कना ताकि पत्तियों के दोनों ओर से गीली हो जाएं	कीटनाशकों की कम या अधिक मात्रा का प्रयोग न करें	वांछित परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।